Sample Chart

अंक शास्त्र से उपाय

Provided By :-

Himalaya Vedic World

18 New Road

Dehradun - 248001

Uttarakhand (India)

Contact - 0135-2651068, +91-9760678037

अंकशास्त्र से रत्न, मंत्र, यंत्र, रूद्राक्ष और उपाय

आपका जन्म दिनांक २५:१२:२००१ है।

आपका मूलांक ७ है।

आपके मूलांक का अधिपति ग्रह केतु है।

ईष्ट देवता

नरसिंह भगवान जो भगवान विष्णु के अवतार हैं, आपके ईष्ट देव हैं।

ध्यान और उपासना

आपको नरसिंह भगवान जो भगवान विष्णु के अवतार हैं, का ध्यान करना चाहिये। आप सफेद पृष्ठभूमि या लहसुनिया या घी से जलते हुये दीपक की रूई की बाती की लौ पर भी ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

जप मंत्र

किसी भी ग्रह के लिये मंत्र का जप चन्द्रमा के बढते हुये चक्र के दौरान पूरा करना चाहिये, और उसे बतायी गयी संख्या में दोहराना चाहिये। आपको चन्द्रमा के बढते हुये चक्र के दौरान इस मंत्र का १७,000 बार जाप करना चाहिये।

भुजग-तल्पगतं घनसुन्दरं गरुड़वाहनमम्बुज-लोचनम्।
नलिन-चक्र-गदाकरमव्ययं भजत रे मनुजाः कमलापतिम्।।

केतु ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

केतु के लिए कोई भी दिन निश्चित नहीं किया गया है। केतु के लिए शनिवार का व्रत किया जा सकता है।

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत १८ शनिवार को करना चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का ३ या १८ माला का जप करनाचाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्त्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खानी खुद भी चाहिए और दान भी करना चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेगें, उनकी उचित देखभाल

करेगें तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म सेआपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होगें तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

केतु ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियॉ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करनाभी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

केतु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी

लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियॉ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ, चना, जौं, चावल, कंगनी)
जड़ी - वट वृक्ष की जड़

केतु ग्रह के लिए स्नान व दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबूदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग-बिरंगें कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुंह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लालअनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

अंकशास्त्र से रत्न धारण करने का सुझाव

लहसुनियॉ की भौतिक संरचना

लहसुनिया पीला, काला, हरा, सफेद, हरा-पीला एवं भूरा-पीला रंगों में पाया जाता है। तुरमली लहसुनिया का उपरत्न है।

लहसुनियॉ धारण करने के फायदे

लहसुनिया धारण करने से दु:ख, दरिद्रता, व्याधि, भूत-प्रेत बाधा एवं रोग दूर होते हैं। इससे पुत्र संपत्ति, आनंद एवं सुख में वृद्धि होती है। लहसुनिया धारण करने से शत्रुओं का नाश होता है तथा धारक को शत्रुओं के आघातसे बचाता है। इससे मनोशक्ति, नैतिकता, बुद्धि, ज्ञान, बल, तेज एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। लहसुनिया खुशहाल परिवार, उत्तम स्वास्थ्य एवं धन आदि प्रदान करता है।

रोगों पर लहसुनियॉ का प्रभाव

लहसुनिया धारण करने या औषधि के रूप में सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं - उपदंश, अजीर्ण, नपुंसकता,मधुमेह, पित्तदोष, बवासीर, खूनी दस्त, आमवात, आंखों के रोग, संग्रहणी, धुंध रोग इत्यादि।

लहसुनियॉ धारण करने के लिए महत्त्वपूर्ण निर्देश

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित लहसुनिया ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोतरी होगी। लहसुनिया लोहे या पंचधातु से बनी अँगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। लहसुनिया इस तरह धारण करना चाहिएकि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए, अँगूठी में धारण करना ज़्यादा लाभदायक होगा। लहसुनिया का वजन ३-५ कैरेट (कम-से-कम ४ रत्ती) होना चाहिए। जब मीन, मेष या घनु राशि का चंद्रमा हो या अश्विनी,मधा या मूल नक्षत्र हो या बुधवार अथवा शुक्रवार हो तो शाम ५ बजे से ८ बजे के बीच लहसुनिया अंगूठी में जड़वायें।

अगले दिन प्रातः काल से ६ बजे के बीच स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात् पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्त्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता केआगे फूल, फल एवं मिठाईयां चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले केतु देवता के बीज मंत्र का १८ बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का एक-एक बार जाप करें। तदुपरान्त, केतु अष्टोत्तर शतनामावली (सूर्य ग्रह के १०८ नाम) का जाप करें। इसके उपरांत केतु देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को बायें हाथ की कनिष्ठा अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें। बुधवार या शुक्रवार को सूर्यास्त के डेढ़-दो घंटे बाद धारण करें।

लहसुनियॉ दान की विधि

केतु यंत्र

14	9	16
15	13	11
10	17	12

रांगे के पत्र पर केतु यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में लहसुनिया जड़वाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर केतु मंत्र सेलहसुनिया को अभिमंत्रित करें। फिर लौह, तिल, सप्त-धान्य, तेल, धूम्र वस्त्र, शस्त्र, कंबल, कस्तुरी, काला पुष्पएवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को बुधवार की रात्रि में दान कर दें। इस प्रकार दान करने से केतु से संबंधित अरिष्ट दूर होते हैं एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

लहसुनियॉ के प्रभाव की अवधि

अंगूठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर ३ वर्ष तक लहसुनिया प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद लहसुनिया का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अत: उपरोक्त अवधि के बाद लहसुनिया बदल देना चाहिए।

भाग्यांक पर आधारित रूद्राक्ष का सुझाव

आपका जन्म दिनांक २५:१२:२००१ है।

आपका भाग्यांक ४ है।

आपका भाग्यांक ४ है, इसलिए आपके लिए चार मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्ट देव ब्रह्मा हैं। यह परिवार उत्पन्न कर उसे आगे बढ़ाने की क्षमता प्रदान करता है और आयुष्मान् होने का वर देता है। इस रूद्राक्ष को धारण करने से ब्रह्महत्या का दोष दूर होता है। इससे धर्म, धन, काम, सम्मान एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है।

चारमुखी रूद्राक्ष को बृहस्पतिवार के दिन लाल धागे में पिरोकर सूर्योदय के बाद केले के पौधे से छुआकर ॐ ब्रह्मा देवाय नमः मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय

सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अलावा रूद्राक्ष धारण करने के लिए शुभ समय निम्नलिखित हैं

शुभ महीना (माह)

आश्विन एवं कार्तिक माह – उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह – मध्यम
आषाढ़ एवं श्रावण माह – अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास) – अशुभ

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम-राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।
रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णमासी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अलावा, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि

प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्ध मुँह से जप का उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिव्हा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ।।

इसके बाद स्नान के लिए यथासंभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा शुरू करने से पहले भूमि शुद्धि जरूर करें। भूमि शुद्धि मंत्र –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्ध जलसे भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी-देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रुद्राक्ष को स्नान करायें फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान करायें। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनायें और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रुद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अबस्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जाप करें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें –

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जाप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें –

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें –

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें –

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें –

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।
भवेभवेनाति भवेभावस्वमान भवोद्भवाय नमः ।।

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें –

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः।

फिर रुद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें –

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।

फिर रुद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोद्यात्।

चंदन का लेप करने के पश्चात् रुद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ।।

चतुर्मुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री ब्रह्म मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, ब्रह्मा देवता, वां बीजं, क्रां शक्तिः, सिद्धयर्थे रूद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें ।

ॐ भार्गव ऋषिः नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, ब्रह्मदेवतायै नमः हृदि, वां बीजाय नमः गुह्ये, क्रां शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें ।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ तां अनामिकाभ्यां नमः, ॐ हां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ईं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं ऑखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ वां शिरसे स्वाहा, ॐ क्रां शिखायै वषट्, ॐ हां कवचाय हुम्। ॐ तां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव ब्रह्मा का ध्यान करें।

प्रणम्य शिरसा शाश्वदष्टनेत्रं चतुर्मुखम्।
गायत्रीसहितं देवं नमामि विधिमीश्वरम्।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्त्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर

रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ वां क्रां तां हां इं (मूल मंत्र)
२-ॐ ह्रीं हूं नमः
३-ॐ ह्रीं
४-ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)
५-ॐ नमः शिवाय
६-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

रूद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रुद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रुद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात्, रुद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रुद्राक्ष कोस्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव को ध्यान करते हुए रुद्राक्ष धारण करें या पूजास्थल पर रख सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् निम्न नियमों का पालन करना चाहिए ।

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ।।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या कोई अन्य तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रूद्राक्ष को दिखावे की चीज न बनायें।

रात में रूद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सुबह सारे क्रिया-कर्म से निवृत होकर ॐ नमः शिवाय का पॉच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजास्थल पर ही रखें।

अभिमान न करें।

परोपकार करें।

रूद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग न करें।

क्रोध न

करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपशब्द न कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन करें।

रूद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि न लगायें।

रूद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रूद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत होकर एवं पवित्र होकर ही रूद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निंदा न करें।

गंदगी से दूर रहें।

रूद्राक्ष के पति निष्ठा रखें।

काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि का त्याग करें।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर न लटकायें।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर न जायें।

विशेष नोट –

असली रूद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष की जगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकर का आर्शीवाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने

में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए

ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके

श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।